संतराम

तिल का ताड़

तिल का ताड़

लेखक

सन्तराम वत्स्य

प्रकाशक

इण्डियन पब्लिशिंग हाउस

नई सड़क : दिल्ली

प्रथम संस्करण
जून, १९५७

★

मूल्य
७५ नए पैसे
(बारह आने)

★

मुद्रक
बालकृष्ण, एम० ए०
युगान्तर प्रेस, डफ़रिन पुल, दिल्ली

सूची

१.	अन्त भले का भला	...	५
२.	महाराज के गुण गाते हैं !	...	१०
३.	खोया ऊँट	...	१५
४.	तिल का ताड़	...	२२
५.	दया धर्म का मूल है	...	२४
६.	जवाब लाजवाब	...	३१

अन्त भले का भला

जापान के एक पहाड़ी गाँव में, बाँस की बनी झोंपड़ी में, एक परिवार रहता था। परिवार के मुखिया का नाम था हागामुची। झोंपड़ी पहाड़ी की चोटी पर थी। पहाड़ी के नीचे एक छोटा-सा कस्बा था। इस कस्बे के साथ कुछ ही दूरी पर समुद्र-तट था।

हागामुची की झोंपड़ी के चारों ओर खेत थे। इन दिनों खेतों में फसल लगभग पक कर तैयार थी। पकी हुई पीली-पीली धान की बालें सूर्य की किरणों में सोने की तरह चमक रही थीं और हवा के झोंकों से मस्ती से झूम रही थीं।

आज नीचे कस्बे में कोई मेला था। इसीलिए गाँव के लोग वहाँ गए हुए थे। केवल हागामुची और उसका पोता घर पर थे।

बूढ़ा हागामुची अपनी झोंपड़ी के आगे बैठकर पोते को नीचे के मेले को दिखा रहा था। मेले का भीड़-भड़क्का और शोर-गुल उन्हें साफ दिखाई और सुनाई दे रहा था।

बूढ़ा क्षण-भर के लिए भी चुप होता तो उसका पोता चुंगचांग फिर से बात छेड़ देता। बाबा! वह देखो वह क्या हो रहा है। कितने आदमी हैं। हागामुची बच्चे का दिल बहलाने भर के लिए इधर-उधर की बातें सुनाता रहा और बच्चा खेलता रहा।

थोड़ी देर बाद चुंगचांग दादा से कहने लगा—दादा, वह देखो सामने समुद्र में एक बड़ा जहाज आ रहा है। दादा, मैं जब बड़ा हो जाऊँगा तो जहाज पर सवार होकर दूर-दूर के देशों को देखूंगा।

हागामुची ने पोते की हाँ में हाँ मिलाई और समुद्र की

ओर देखने लगा। आज सुबह से ही समुद्र में हल्का सा तूफान था, पर इस समय तक वह भी शान्त हो चुका था। अब वह अपनी आम हालत में था। पर हागामुची ने देखा कि समुद्र काफी पीछे हट गया है और किनारे पर रेत-ही-रेत दिखाई दे रही है। पर यह क्या ? आगे तो कभी इस तरह नहीं हुआ। समुद्र इतना पीछे कभी नहीं हटा था। वह देख रहा था और सोच रहा था कि इतने में उसे एक कहानी याद आई। यह कहानी उसने अपने बचपन में अपने दादा से सुनी थी। कहानी यह थी कि एक बार समुद्र बहुत पीछे हट गया था और किनारे पर रेत ही रेत दिखाई देती थी। इसके बाद बड़े जोर का ज्वार आया—इतने जोर का कि कितने ही गाँवों को बहाकर ले गया।

वह देर तक समुद्र की ओर देखता रहा कि ज्वार किस तेजी से बढ़ रहा है। कुछ देर बाद उसे तूफ़ान की जबर्दस्त लहर किनारे की ओर आती दिखाई दी।

वह चिल्ला-चिल्लाकर कस्बे के लोगों को पुकारने लगा किन्तु भीड़-भड़क्के के शोर-गुल के कारण उसकी आवाज किसी को भी सुनाई न दी। अगर कस्बे तक जाता तो भी काफी देर लग जाती। अब वह क्या करे ? लोगों को कैसे खबर दे कि तूफान तेज़ी से कस्बे की ओर बढ़ा आ रहा है।

उसने एक तरकीब सोच निकाली, ऐसी तरकीब जिससे कस्बे के लोग पहाड़ी पर चढ़ आएँ और तूफान से बच सकें।

रसोई-घर में आग जल रही थी और हांडी में शाम के लिए चावल उबल रहे थे। उसने एक लकड़ी के साथ कपड़ा

लपेट कर उसे मिट्टी के तेल में भिगोया और जलाकर अपने झोंपड़े की फूस की छत को आग लगा दी। उसका मतलब पूरा हो गया। आग की लपटें देखते ही नीचे कस्बे के मंदिर का घंटा ज़ोर-ज़ोर से बजने लगा, जिसका मतलब था कि कहीं आग लग गई है।

जब लोगों ने चारों ओर नजर दौड़ाई तो पहाड़ी पर का झोंपड़ा जलता दिखाई दिया। लोग झट से आग बुझाने के लिए दौड़ पड़े।

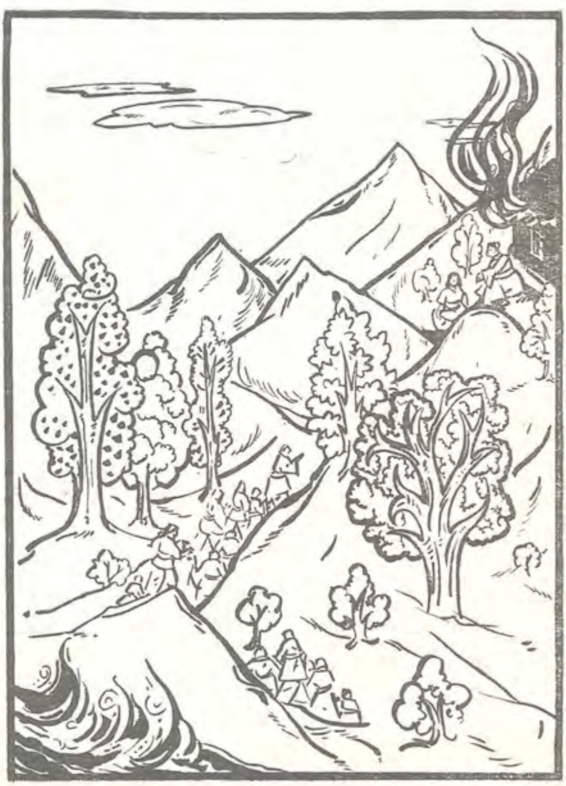

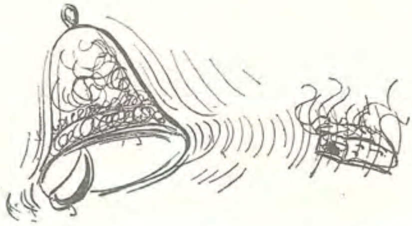

कुछ देर बाद ही तूफान की लहरें भयानक गर्जन के साथ इस कस्बे में पहुँच गईं और एक के बाद एक सारे घर बहा दिए। जो लोग जलती झोंपड़ी को देखकर भी बुझाने के लिए नहीं गए थे, वे तूफान में बह गए। उनका अपना ही पाप उन्हें ले डूबा।

इस प्रकार परोपकारी हागामुची ने अपना घर जलाकर सैंकड़ों जानें बचायीं। लोगों ने इसके लिए उसका बहुत-बहुत उपकार माना और उसकी याद में एक मन्दिर बनवाया। आज जापान के बच्चे-बच्चे की जबान पर हागामुची का नाम है। वे बड़ी श्रद्धा से इस कहानी को सुनाते हैं।

महाराज के गुण गाते हैं !

एक था राजा । बड़ा सीधा-सादा । वह मन से चाहता था कि मेरी प्रजा के किसी भी प्राणी को कोई दुःख न हो । पर बेचारा सीधा जो था, उसकी बुद्धि कुछ मन्द-सी थी । नीयत साफ होने पर भी वह अकल और कानों का कच्चा था। इसलिए मन्त्री उसे जैसा नाच नचाते वह नाचता रहता था ।

दीन-दुखियों की पुकार उस तक पहुंच नहीं पाती । मंत्री पहुँचने ही नहीं देते । वे प्रजा के रुपए से अपना घर भरने में लगे हुए थे । प्रजा दुःखी थी । बाड़ ही खेती को खा रही थी । फिर पुकार किसके आगे की जाए ?

पर प्रजा की पुकार न सही, एक दिन शाम को गीदड़ों की पुकार—हू···हू···हू—राजा के कानों तक पहुंच गई । राजा ने द्वारपाल को पुकारा । बेचारा सहमा-सा द्वारपाल सिर झुकाकर खड़ा हो गया ।

राजा ने कहा—बड़े मन्त्री जी को अभी बुलाओ । मंत्री जी आ गए । वे आज के इस अचानक बुलावे से कुछ घबराए से थे । उनके पापों ने उन्हें डरपोक जो बना दिया था । कहीं कोई भेद न खुल गया हो । वे यही सोच रहे

थे। गीदड़ों का हा-हा-हू-हू लगातार जारी था।

मंत्री ने सिर झुकाकर प्रणाम किया। पूछा—"महाराज! क्या आज्ञा है ?"

महाराज ने क्रोध भरे स्वर में कहा—"मैं जब तुमसे पूछता हूँ कि मेरी प्रजा में कोई दुःखी तो नहीं है ? तो तुम कह देते हो, जी नहीं, सब सुखी हैं। पर आज यह दूर किसी के रोने-कराहने की आवाज कैसी आ रही है ? बहुत से लोग इकट्ठे रो रहे हैं, उन पर कौनसी विपदा आ पड़ी, अभी बताओ। और अभी इस विपदा को दूर करने का प्रयत्न करो। तुम्हें मालूम है न कि मैं तब तक चैन नहीं पा सकता हूं जब तक अपनी प्रजा को सुखी न देखूँ।"

मंत्री मन ही मन राजा की मूर्खता पर हंसा। उसका डर भी जाता रहा। वह कुछ-कुछ खुश ही हुआ। परिस्थिति को देखते हुए उसने उत्तर ढूंढ़ निकाला—"महाराज! आदमी तो सभी सुखी हैं पर ये बेचारे गीदड़ चिल्ला रहे हैं। बात यह है कि जाड़ा शुरू हो गया है और इनके पास रहने को मकान नहीं हैं। इसीलिए वे बेचारे दुखी हैं।" मंत्री ने राजा को समझाते हुए कहा।

"हमारे राज्य की हद के भीतर जो भी रहता है, फिर चाहे वह मनुष्य हो या पशु, उसकी विपदा दूर होनी ही चाहिए। कल ही खजाने में से रुपए निकलवा कर उनके लिये मकान बनवा दो। हम यह रोना-पीटना नहीं सुनना चाहते।" राजा ने रोब से कहा।

"कल ही लीजिए श्रीमान्, सब प्रबन्ध हो जाएगा। आपकी आज्ञा की देर थी।" मन्त्री ने चापलूसी करते हुए कहा।

दूसरे दिन मंत्री ने खजाने से गीदड़ों के लिए मकान बनाने के लिए भारी रकम निकलवाली। पर मकान कहां बनने थे और किसे बनवाने थे! रुपया मंत्री के घर पहुँच गया।

दूसरे दिन शाम को फिर वही हा-हा, हू-हू शुरू हो गया। राजा ने फिर मंत्री को बुलाया।

"क्यों जी, अब क्या बात है? ये अब क्यों रोते-चिल्लाते हैं?"

मन्त्री ने फिर हाथ जोड़कर कहा—"महाराज! इनके लिए मकान तो आपकी आज्ञा से बनवा दिए गए किन्तु अब कपड़े-लत्ते का कुछ प्रबन्ध चाहते हैं। आज्ञा हो तो वह भी कर दिया जाए।"

"इसमें पूछने की क्या बात है? एक बार कह तो दिया कि हम अपने राज की हद में किसी प्राणी को दुःखी नहीं देखना चाहते।" राजा ने कहा।

मंत्री ने खजाने से और रुपए निकलवाए और अपनी तिजौरी में बन्द कर दिए।

तीसरे दिन शाम को वही गीदड़ों की हा-हा हू-हू राजा को सुनाई दी। फिर मंत्री को बुलाया गया।

पूछा कि अब क्या बात है?

"जी, मकान और कपड़े-लत्ते का प्रबन्ध तो हो गया पर वे खाने-पीने के लिए कुछ चाहते हैं। महाराज! आज्ञा हो तो वह भी कर दिया जाए।" अब की राजा को कुछ क्रोध आ गया। कहने लगा—

"अजी तुम भी अजीब आदमी हो। एक बार कह जो

दिया कि सब ठीक कर दो। खामखाह बार-बार परेशान करते हो।"

"जो आज्ञा कृपा-निधान।" कहकर मंत्री चलता बना। दूसरे दिन खजाने से रुपए निकलवाए और अपनी तिजौरी के हवाले किए। दिन-भर चैन से घर सोया रहा।

चौथे दिन फिर वही हा-हा हू-हू राजा के कान में पड़ी। फिर क्या था——राजा गुस्से से लाल-पीला हो गया। फिर मंत्री को बुलाया गया। मंत्री हाथ जोड़ सिर झुकाकर खड़ा हो गया।

"क्यों जी, अब इनके शोर मचाने का क्या कारण है ?"

मन्त्री ने नम्रता पूर्वक उत्तर दिया——"महाराज, उन सबने निश्चय किया है कि वे प्रतिदिन शाम को अपने प्रजा पालक राजा के गुण गाया करेंगे। और वे आपका यश बखान रहे हैं।"

खोया ऊँट

एक था राजा । उसके तीन वज़ीर थे । वजीर थे समझदार और राजा था मूर्ख । अपनी अकल उसे थी नहीं और वज़ीरों की बात वह मानता नहीं था । वज़ीर कहते, महाराज ! प्रजा दुःखी है । उसके दुःखों को दूर करना राजा का काम है । ऐसे कुछ काम कीजिए जिनसे प्रजा का भला हो । पर राजा के कान पर जूं तक न रेंगती । कभी-कभी तो वह भरी सभा में बेचारे वज़ीरों को झिड़क देता । एक बार जो उसे उन तीनों पर गुस्सा आया तो उन्हें राज-दरबार से ही निकल जाने का हुक्म सुना दिया ।

तीनों वज़ीर उठे और राजदरबार से चल दिए । उन्होंने फैसला किया कि हम इस शहर में ही नहीं रहेंगे । ऐसे मूर्ख राजा का क्या ठिकाना कि कल को क्या कर बैठे । वे तीनों शहर छोड़ कर चल पड़े ।

अभी शहर से थोड़ी ही दूर गए थे कि देखते क्या हैं—सड़क पर बड़े-बड़े गोल से निशान बने हुए हैं । एक ने दूसरे से कहा—"अरे भई, यह तो ऊँट के पाँव के निशान हैं । देखो न, यह निशान कितना साफ दिखाई दे रहा है ।"

वे अभी कुछ ही आगे बढ़े होंगे कि उन्हें एक आदमी

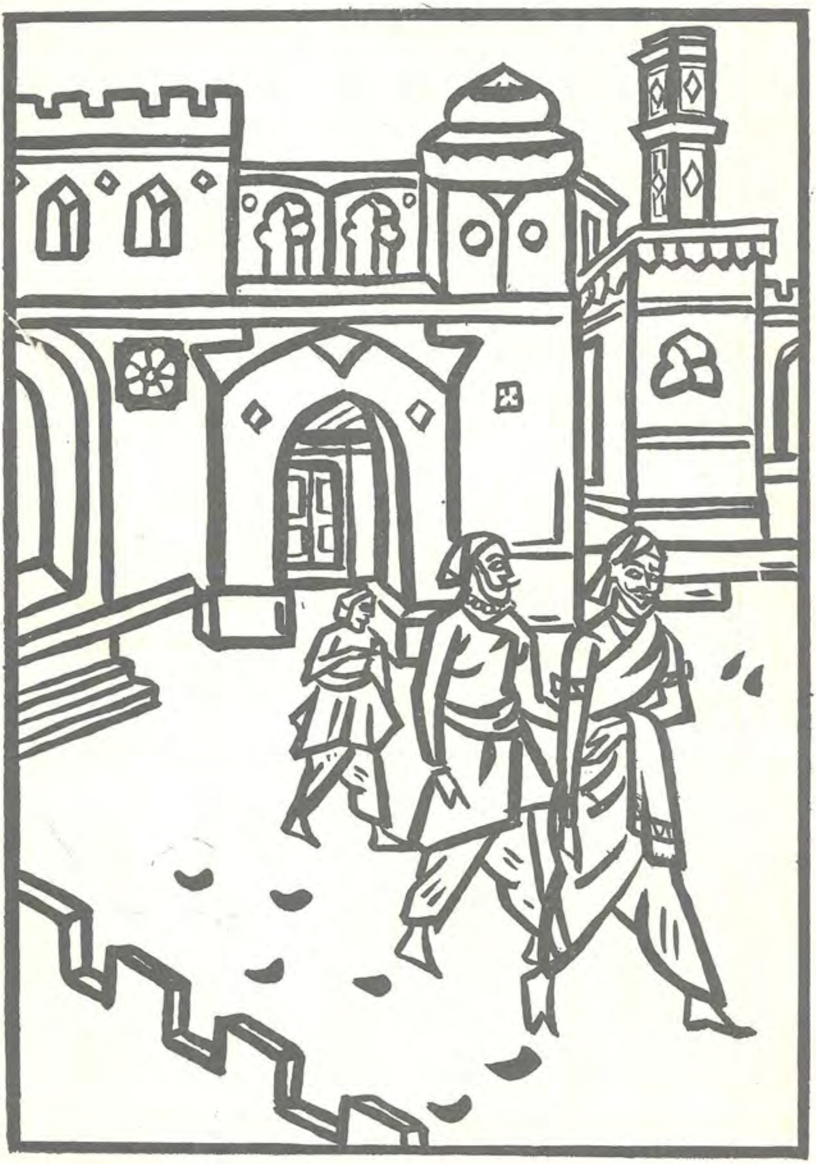

आता दिखाई दिया। वह आदमी बहुत घबराया हुआ था। कहने लगा—"मेरा ऊँट खो गया है। आपको तो रास्ते में नहीं मिला ?"

पहले वजीर ने कहा—"तुम्हारा ऊँट क्या एक टाँग से लंगड़ा था ?"

दूसरे वजीर ने कहा—"क्या वह एक आँख से काना भी था ?"

तीसरे ने कहा—"क्या उसके बाईं ओर शहद और दाईं ओर गेहूं का बोझ लदा था ?"

ऊँट का मालिक बहुत हैरान हुआ। वह मन ही मन खुश हुआ और सोचने लगा—इन आदमियों ने ऊँट जरूर देखा है। अब मैं उसे अवश्य खोज लूँगा। फिर वह उन वज़ीरों से कहने लगा—"हाँ, हाँ; आप लोग ठीक ही कह रहे हैं। वह मेरा ही ऊँट था। कहाँ देखा उसे आपने ? किस तरफ जा रहा था ? क्या वह अब तक काफी दूर निकल गया होगा ?"

तीनों वजीर एक साथ बोल उठे—"हमने तुम्हारा ऊँट नहीं देखा। हम तो अभी राजदरबार से आ रहे हैं। और इस बीच हमें कोई ऊँट मिला भी नहीं।"

किन्तु उसे इनकी बात पर विश्वास कैसे होता ? अरे ऊँट की शक्ल-सूरत, ऊपर का बोझ, सभो कुछ इनको मालूम है और जनाब कहते हैं कि हमने किसी ऊँट को देखा तक नहीं। कितनी अजीब बात है। दाल में जरूर कुछ काला है। उसे गुस्सा आ गया। कहने लगा—"अरे भले आदमियो, अगर तुमने ऊँट देखा नहीं तो फिर इतनी सारी बातें जो

उसके बारे में बता दीं, वह क्या अल्लामियाँ तुम्हें बता गया है ? तुमने उसके बारे में जितनी बातें बताई हैं, उनसे ज्यादा तो मैं खुद भी नहीं बता सकता । मैं पूरे विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि वह तुम्हें मिला है और तुमने उसे किसी के हाथ बेच दिया है। अब भलाई इसी में है कि उसे जल्दी से वापस लाकर मेरे हवाले कर दो। नहीं तो तुम्हें वह मजा चखाऊँगा, वह मजा चखाऊँगा कि जिन्दगी भर याद करोगे। कहो जल्दी क्या कहते हो ? समझ गया, तुम सीधी तरह नहीं मानोगे। चलो फिर राजा के पास। अभी तुम्हें जेल न भिजवा दिया तो क्या याद करोगे। भलाई तो इसी में थी कि तुम सच-सच कह देते। अरे मूर्खो ! अब भी बता दो कि ऊँट कहां है ? किसको बेचा है ? कितने में बेचा है ?"

वजीर कहने लगे—"तुम्हारे जी में जो आए, वह करो। हम जो कुछ कह रहे हैं वह सच है। एक बार नहीं दस बार कहते हैं कि हमने तुम्हारा ऊँट नहीं देखा ।"

अब तो उस आदमी ने राजा के पास जाकर शिकायत कर दी। राजा ने वजीरों को बुला भेजा ।

जब वजीर दरबार में हाजिर हुए तो राजा ने कहा—"सच-सच क्यों नहीं बता देते कि तुमने इसका ऊँट कहाँ देखा था ?"

पर वे तीनों अपनी बात पर ज्यों के त्यों अड़े रहे। "हमने इसके ऊँट को बिल्कुल नहीं देखा" तीनों कहने लगे।

"अगर तुमने ऊँट को नहीं देखा तो फिर यह कैसे बता दिया कि वह लंगड़ा था, काना था और उस पर बाईं ओर शहद और दाईं ओर गेहूँ का बोझ लदा हुआ था। मुझे

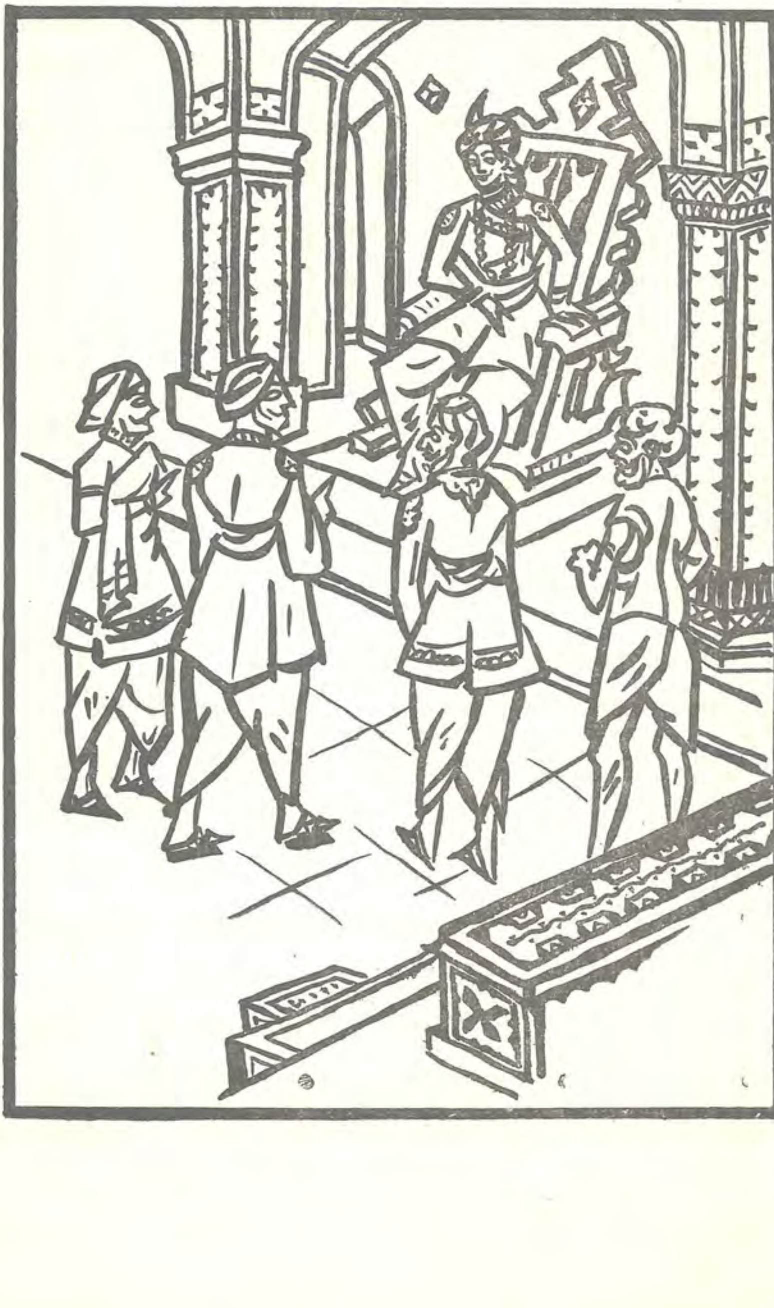

विश्वास है कि तुमने उस ऊँट को बेच दिया है। और कीमत के रुपये आपस में बाँट लिए हैं। अब तुम्हारी भलाई इसी में है कि इस गरीब का ऊँट वापस दे दो, नहीं तो मैं तुम्हें अभी जेल भिजवाता हूँ।" राजा ने कहा।

राजा की बात सुनकर पहले वज़ीर ने कहा—"यह सोलह आने सच है, कि हम में से किसी ने ऊँट को नहीं देखा है, किन्तु हमने सड़क पर जाते समय जो बहुत सी चीजें देखीं, उसी से अन्दाजा लगा लिया कि वह ऊँट ऐसा-ऐसा होगा। सड़क पर ऊँट के केवल तीन पांवों के निशान थे। इस लिये मैंने अन्दाजा लगा लिया कि उसकी चौथी टांग अवश्य ही लंगड़ी होगी।"

दूसरे वज़ीर ने कहा—"महाराज! ऊंट सड़क पर चलते समय प्रायः दोनों ओर के वृक्षों के पत्तों को खाता चलता है। किन्तु मैंने देखा कि सड़क के केवल एक ओर के ही पत्ते खाए गए हैं। दूसरी ओर के ज्यों के त्यों हैं। इसी से मैंने अन्दाजा लगा लिया कि ऊँट एक आँख से काना होगा।

अब तीसरे वज़ीर का बयान भी सुन लीजिये। वह कहने लगा—"महाराज! मैंने सड़क के बाईं ओर बहुत-सी मक्खियों को भिन-भिनाते देखा और दाईं ओर गेहूं के दाने पड़े देखे। हो सकता है कि ऊँट पर लदे बोरे में सुराख हो गया हो। उसी में से वे दाने गिरे होंगे। इसीसे मैंने अन्दाजा लगाकर कह दिया कि उस पर बाईं ओर शहद और दाईं ओर गेहूं लदा हुआ था।"

राजा ने जब तीनों वज़ीरों के बयान सुने तो उसे विश्वास हो गया कि इन्होंने ऊँट नहीं देखा है और जितनी बातें बताईं वे केवल अन्दाजा लगाकर ही बता दी हैं।

अब राजा ने ऊँट के मालिक से कहा—तीनों वज़ीर सच्चे हैं। उन्होंने तुम्हारा ऊँट नहीं देखा। तुम उसे कहीं दूसरी जगह ढूँढ़ो।"

राजा वज़ीरों की अक्लमन्दी पर बहुत प्रसन्न हुआ। उसने उन्हें दोबारा अपना वज़ीर बना लिया और उनकी सलाह से काम करने लगा।

तिल का ताड़

गंगा और हीरा की आपस में दोस्ती थी। दोनों एक ही गाँव के थे।

एक दिन गंगा ने कहा—हम तो इस बार ईख बोएँगे।

हीरा बोला—तुम ईख बोना, हम तो भैंस लाएंगे, भैंस।

गंगा बोला——भैंस तो तू बेशक ले आ, पर रखना बाँध कर। ऐसा न हो कि कहीं मेरी ईख चर जाए।

हीरा ने तमक कर जवाब दिया——भई जानवर ही है, आदमी तो है नहीं जो कहा मान जाए। उसके मन में आएगी तो ईख खाएगी ही।

यह टेढ़ा जवाब सुनकर गंगा को भी गुस्सा आ गया। बोला—तो बस तू भैंस ला चुका।

हीरा कब चुप रहने वाला था। बोला—तो तू भी ईख बो चुका।

गंगा ने टका-सा जवाब सुना तो जल-भुन गया। वह जमीन पर उंगली से लम्बी-सी लकीर खींचकर बोला—ले, देख, मैं तो ईख बो चुका, अब तू अपनी भैंस छोड़।

हीरा ने भी पास पड़ी एक कंकरी उठाई और लकीर पर डाल दी। और बोला—ले करले क्या करता है, वह

रही तेरे ईख के खेतों में मेरी भैंस ।

फिर क्या था, दोनों आपस में गुत्थम-गुत्था हो गए ।

दया धर्म का मूल है

एक था राजा। उसकी एक बेटी थी। बड़ी सुन्दर, चाँद-सा मुखड़ा, हिरन की-सी आँखें, मोतियों के से दाँत। वह बड़ी हुई तो राजा को उसके विवाह की चिन्ता लगी। एक अच्छा-सा वर राजा ने उसके लिये खोजा। विवाह का दिन तय हो गया। बरात के स्वागत-सत्कार की तैयारियाँ होने लगीं। औरतें मंगल गीत गाने लगीं। तोरण-मंडप तैयार किये गये। तरह-तरह के बाजे बजने लगे।

मेहमानों के ठहरने के स्थान सजाए गए। जनवासे की शोभा का तो कहना ही क्या! खाने के लिये तरह-तरह के पकवान पकने लगे। मेहमानों के लिये माँस-भोजन भी चाहिये। इसके लिये एक बाड़े में तरह-तरह के जानवर इकट्ठे कर लिये गए। बकरे, मेंढ़े, मुर्गे, हिरन, बारहसिंगे, खरगोश, मछलियाँ। तरह-तरह की चिड़ियाँ पिंजरों में लटक रही थीं।

बरात नगर के पास पहुँच गई। ढोल, नगारे, शहनाइयाँ, नरसिंगे, जोर-जोर से बजने लगे। झुंड के झुंड औरतें मंगल-गीत गाने लगीं।

हिरन तो गाना सुनने के एक ही शौकीन होते हैं।

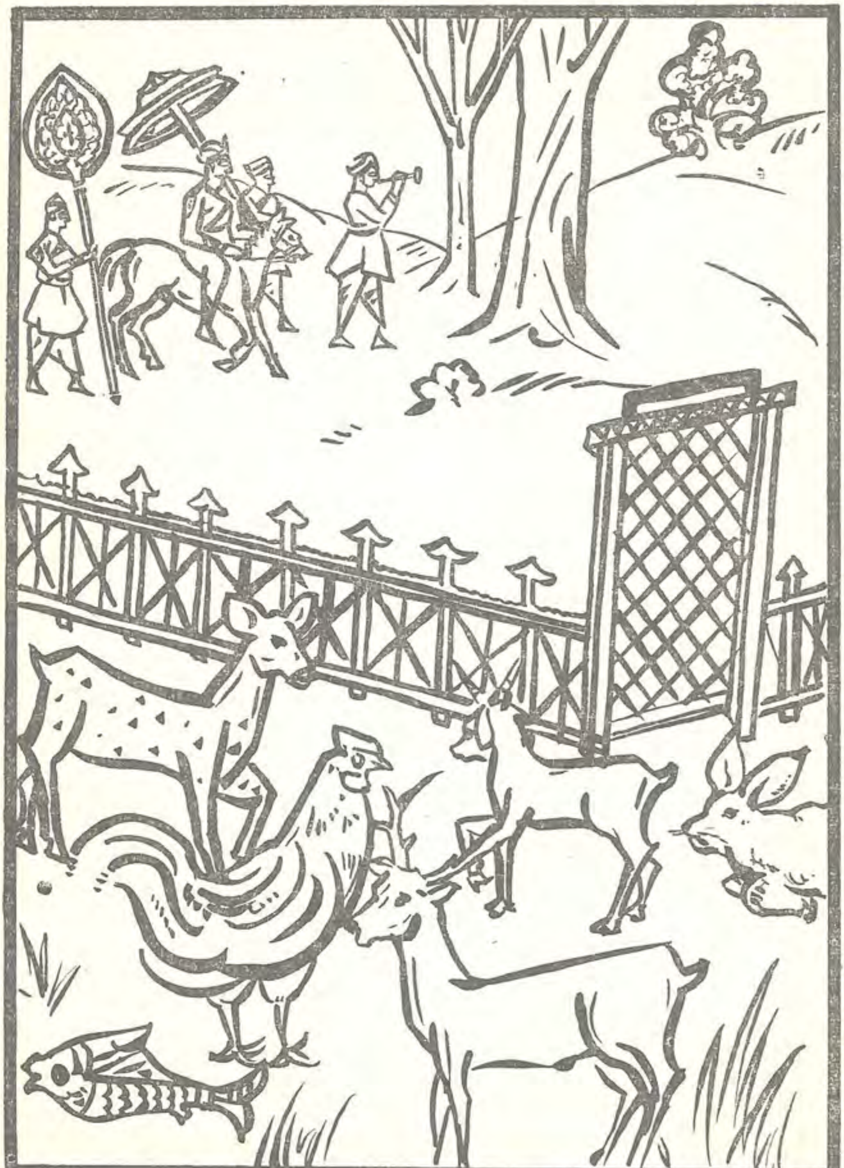

बाजे-गाजे और गीत सुनकर बाड़े के पशुओं में से एक हिरन बोला—अहा ! कैसी सुरीली आवाज है । जी करता है कि बाड़ को एक ही छलाँग से फांदकर गानेवालों के पास जा पहुँचू ।

उसकी बात सुनकर पास खड़ा खरगोश बोला—अजी तुम भी परले दर्जे के बुद्धू हो। इस गाने के शौक में तुम्हें कितने दुःख उठाने पड़ते हैं, पर तुम हो कि फिर भी नहीं चेतते। बस, कहीं सुरीली तान सुनी कि लट्टू हो गए और फंस गए शिकारी के जाल में। जिस गीत को सुनकर तुम खुश हो रहे हो, वह हम सब की मौत का गीत है। कुछ समझे ?

मौत की बात सुनते ही हिरन ठिठक गया। उसकी सारी खुशी हिरन हो गई। फिर बोला—'हमारे लिए यह मौत का गीत है, यह बात तुम्हें कैसे मालूम हुई ? हमें भी तो कुछ समझाओ ।

एक बारहसिंगा बीच में ही बोल पड़ा—क्यों खामखाह दहशत फैलाते हो। यहाँ न शेर है, न चीता। न जाल न शिकारी। हम तो राजा के मेहमान हैं—पेट भर हरी-हरी घास मिल जाती है, बढ़िया साफ पानी पीने को मिलता है। खाओ, पीयो, मौज उड़ाओ। यहाँ डर किस बात का ?

यह सुना तो एक लम्बे सींगोंवाले बकरे से न रहा गया। सने कहा—यह सुख-सुविधा जिसने तुम्हें दी है, वही तुम्हारी जान भी लेगा। यह तो हो सकता है कि चीते को कभी चकमा देकर तुम भाग निकलो पर इस बाड़े में से बचकर नहीं जा सकते। वह देखो एक डरावना-सा आदमी तुम्हारी गर्दन काटने के लिए छुरी को तेज कर रहा है। देखा तो सभी कांप उठे।

फिर बारहसिंगा कहने लगा—भाई, हम तो ठहरे बन-वासी। शहर-गाँव के रीति-रिवाज क्या जानें? ये बकरा भाई, मेंढा मामा और मुर्गा मौसा नगरवासी हैं। इस बारे में तो इनकी बात ही भरोसे लायक है। यह आदमी तो एक ही शैतान होता है। पूरा ठग। ठगी में इसका पार कौन पा सकता है। नकली हथनी बनाकर और उसके पास खोदे गढ़े को घास-फूस से छाकर यह हाथियों को पकड़ता है। बीन बजाकर सांपों को पिटारी में कैद कर लेता है। आटे की गोली काँटे पर लगाकर मछलियों को फँसाता है। जंगल के राजा शेर तक को पिंजरे में बन्द कर देता है। इसकी काली करतूतों को कहाँ तक गिनाएँ!

पास एक छोटे-से कुण्ड में कुछ मछलियाँ तैर रही थीं। उनमें से एक लाल मछली बोली—देखो जी, जरा धीरे-धीरे बातें करो! तुम्हारे शोर-गुल से हमारे तो नाक में दम आ गया है।

एक मुर्गे ने कहा—अब अपने दम की ज्यादा फिकर मत करो। वह निकलने ही वाला है। तुम्हें तलने के लिये तेल गरम किया जा रहा है।

अबकी मुर्गा बोला तो सब का ध्यान उसकी तरफ खिच गया।

"अरे मुर्गे, अगर तुम्हारी बात सच है तो फिर तुम उड़-कर कहीं भाग क्यों नहीं जाते? हम तो बाड़े में बन्द हैं। बाहर नहीं जा सकते। पर तुम तो भागकर अपनी जान बचाओ।" बारहसिंगे ने कहा।

मुर्गा बोला—पर यह तो बताओ कि भागकर जाएँ

भी तो कहाँ। ये शैतान आदमी कहाँ नहीं हैं ? भागकर भी तो इनसे पीछा छूटने वाला नहीं है।

पशु-पक्षियों में ये बातें हो ही रही थीं कि सामने से एक सजा हुआ रथ निकला। यह दूल्हा की सवारी थी।

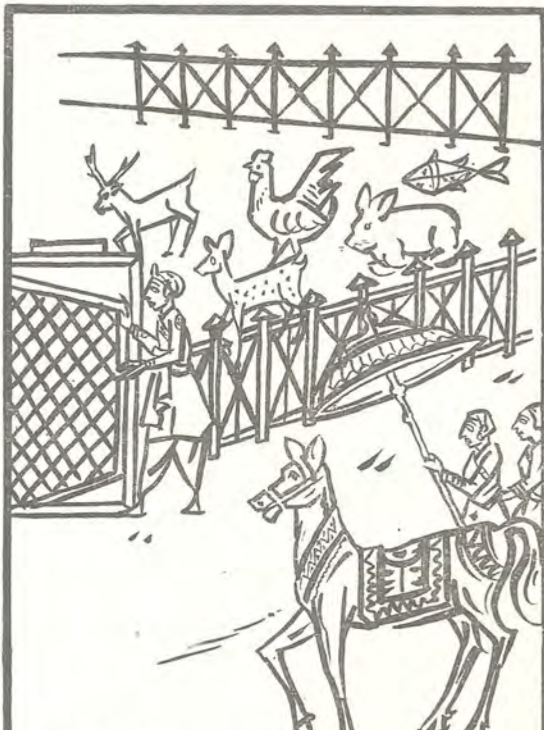

इसे देखकर ऊँचे उलझे हुए सींगों वाला एक बारहसिंगा बोला—यही वे महाशय हैं, जिनके स्वागत-सत्कार के लिये हमारी जानें ली जाएँगी। और यह सुनते ही सब पशु-पक्षी शोर मचाने लगे। जो खूँटों से बँधे थे, वे रस्सी तोड़ने के लिए जोर लगाने लगे; जो पिंजरों में बंद थे वे पंख फड़फड़ाने लगे।

जानवरों का यह शोर दूल्हे के कानों में पड़ा। उसने रथवान को रथ रोकने की आज्ञा दी । रथ बाड़े के पास खड़ा हो गया। दूल्हा राजकुमार रथ से उतर पड़ा और बाड़े के दरवाजे की ओर चला । बड़ा दयावान् चेहरा था उसका । उसने बाड़े के दरवाजे की कुण्डी खोल दी । इतने में बाड़े का चौकीदार लाल-लाल आँखें किये वहाँ आ पहुँचा, पर जब उसने देखा कि कुण्डी खोलने वाला दूल्हा खुद ही है तो सहम गया । राजकुमार ने रथवान को कहा कि सारे पशुओं को खोल दो और सारे पंछियों को पिंजरों से बाहर निकाल दो ।

बाड़े का चौकीदार दौड़कर राजा के पास पहुँचा । हाथ जोड़ कर कहने लगा—महाराज ! दूल्हे राजकुमार ने बाड़े के सारे जीवों के बन्धन खुलवा दिये ।

राजा दूल्हा के पास गया । बोला—यह आपने क्या किया ?

"महाराज ! मैंने निरपराध जीवों को प्राण-दान दिया है ।"

राजा ने उलाहना देते हुए कहा—आप क्षत्रियों का धर्म भूल गए लगते हैं।

"नहीं महाराज ! मैं क्षत्रिय के धर्म को भूला नहीं हूँ। दूसरों की रक्षा करना ही तो हमारा धर्म है न ? और उसी को मैंने निभाया है । ब्याह-शादी करवाने से अगर इतने जीवों की जान जाती है तो मैं कुंआरा ही अच्छा ।"

राजा ने हँसी-हँसी में कहा—तो क्या घर-गृहस्थी नहीं करेंगे ? संन्यास ले लेंगे ?

राजकुमार ने कहा—जरूर संन्यास ले लूँगा। मनुष्य जन्म लिया है तो क्या पाप का जीवन बिताने के लिये ? मैं तो सभी जीवों को सुखी देखना चाहता हूं।

फिर रथवान को कहा——मेरा रथ वापस ले चलो।

देखते-देखते रथ वापस चला गया। यह खबर क्षणभर में चारों ओर फैल गई। मंगल-गीत बन्द हो गए।

यही राजकुमार बाद में तीर्थंकर नेमिनाथ स्वामी हुए।

जवाब लाजवाब

सिकन्दर ने जब भारत पर पहला हमला किया तो तक्षशिला का राजा अम्भि उससे मिल गया। राजा पुरु को हार खानी पड़ी। सिकन्दर जिन इलाकों को जीतता, उनकी अच्छी-अच्छी चीज़ों को हथिया लेता। भारत के साधु-महात्माओं के ज्ञान और बड़प्पन की उसने कई कहानियां सुन रखी थीं, और उन कहानियों का उस पर बहुत असर हुआ था। कहते हैं कि वापस जाते समय वह कई ज्ञानी लोगों को अपने देश ले गया था।

तक्षशिला तो उन दिनों ज्ञान का गढ़ ही था। एक बहुत बड़ा विद्यालय उन दिनों वहां पर था। दूर-दूर से लोग विद्या सीखने वहां आते थे।

इस तक्षशिला में जब सिकन्दर पहुँचा तो उसने राजा अम्भि से पूछा—तुम्हारे नगर की सबसे मशहूर चीज़ क्या है?

राजा अम्भि ने जवाब दिया—वैसे तो इस नगर में बड़े-बड़े मशहूर ज्ञानी, वैद्य, कारीगर, बहादुर और कलाकार हैं, लेकिन उन सब में भी दस पंडित तो ऐसे हैं कि उनके जोड़ का कहीं कोई है ही नहीं। वे बड़े ही हाजिर-जवाब

है। कितना ही पेचीदा सवाल हो, वे एक क्षण में उसका जवाब बता देते हैं। निडर इतने कि चाहे मौत सामने खड़ी हो, फिर भी नहीं घबराते।

सिकन्दर ने कहा—कल ही उन दसों पंडितों को हमारे दरबार में हाज़िर करिये। हम उनसे सवाल पूछेंगे। उनकी अकल और हाजिर-जवाबी की परीक्षा लेंगे।

दूसरे दिन दसों पंडित सिकन्दर के दरबार में हाजिर हो गए।

सिकन्दर ने उनसे कहा—हम तुम सबसे एक-एक सवाल पूछेंगे। जिसका जवाब सब से खराब हुआ, उसका सिर कलम कर दिया जाएगा।

फिर उन में जो सब से बूढ़ा पंडित था, उससे कहा कि इस बात का फैसला आपको करना होगा कि किसका जवाब सब से खराब है।

फिर नौ पंडितों को तो एक तरफ बिठा दिया और बूढ़े पंडित को अपने पास बिठाया।

अब सवाल-जवाब शुरू हुए। सिकन्दर ने पहले पंडित से सवाल पूछा—दुनिया में जिन्दा आदमी ज्यादा हैं, या मुर्दा ?

पहले पण्डित ने जवाब दिया—जिन्दा। क्योंकि जो मर गए, उनकी क्या गिनती ? वे तो हैं ही नहीं।

सिकन्दर ने दूसरे पंडित से पूछा—

दुनिया में धरती पर ज्यादा जीव हैं, या समुद्र में ?

पंडित ने जवाब दिया—धरती पर; क्योंकि समुद्र भी तो धरती पर ही है।

अब तीसरे पंडित की बारी थी। सिकन्दर ने पूछा—जानवरों में सबसे निराला जानवर कौन है ?

जवाब मिला—जिसे हमने अभी तक नहीं देखा। क्योंकि निराली चीज़ वह होती है, जिसे लोगों ने देखा न हो।

सिकन्दर ने चौथे से पूछा—बहादुर लोग मौत से क्यों नहीं डरते ?

झट से उत्तर मिला—क्योंकि वे मौत में ही जिन्दगी को देखते हैं। और जिन्दगी से कोई क्यों डरने लगा ?

सिकन्दर ने पांचवें पंडित से पूछा—पहले दिन था या रात ?

जवाब मिला—न दिन न रात। इनमें से यदि कोई पहले-पीछे होता तो दुनिया का आदि-अन्त भी होता। जब से यह दुनिया है, तब से दिन-रात भी हैं।

छठे पंडित से सिकन्दर ने पूछा—हम दुनिया के प्यारे कैसे बन सकते हैं ?

पंडित ने जवाब दिया—नेक बनकर। क्योंकि बुरे को कोई प्यार नहीं करता।

अब सातवें पंडित की बारी थी। सिकन्दर ने पूछा—अगर आदमी देवता बनना चाहे तो क्या करे ?

जवाब हाज़िर था—ऐसा काम जिसे दूसरे लोग न कर सकें।

सिकन्दर ने आठवें पंडित से पूछा—मौत और जिन्दगी दोनों में ज्यादा ताकतवर कौन है ?

जवाब मिला—जिन्दगी; क्योंकि जिन्दगी बड़े-बड़े दुख

श्रौर तकलीफें सह लेती है। पर मौत को तो किसीने दुःख झेलते नहीं देखा ?

नौवें पण्डित से पूछा—आदमी को कब तक जिन्दा रहना चाहिये।

पण्डित ने कहा—जब तक उसे यह न मालूम हो जाए कि अब तो जीने से मरना भला है।

सिकन्दर ने नौ पण्डितों की हाजिर-जवाबी श्रौर श्रकलमन्दी देख ली। अब उसने दसवें बूढ़े पण्डित से कहा—अब श्राप अपना फैसला सुनाएँ कि सबसे बुरा जवाब किसका है ?

बूढ़े पण्डित के बाल भी कोई धूप से सफेद नहीं हुए थे वह जानता था कि मैं जिसके जवाब को बुरा बताऊँगा,

उसी का सिर काट लिया जाएगा । इसलिए उसने ऐसा ही जवाब दिया कि जिससे किसी भी पंडित का सिर न कट सके ।

बूढ़े पण्डित ने कहा—इनमें से हर किसी का जवाब एक-दूसरे से बुरा है ।

नौ पंडितों की हाज़िर-जवाबी पर सिकन्दर आगे ही रीझ चुका था । दसवें के जवाब से वह और भी खुश हुआ । वह राजा अम्भि से बोला—आपने ठीक ही कहा था । ये दसों आदमी अकल के धनी हैं ।

फिर सिकन्दर ने उन्हें खूब इनाम दिया और विदा किया ।